● पढ़ो और समझो :

८. पद

यहाँ दोहों एवं पदों के माध्यम से संतो ने नीतियों एवं अपने आराध्य के प्रति समर्पण को दर्शाया गया है ।

644GHK

विचार मंथन

।। संत न छाड़ें संतई ।।

दादू

घीव दूध मैं रमि रह्या, व्यापक सब ही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं, मथिकाढ़ै ते और ।।
सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन ।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिंदू-मुसलमान ।।

×× ××

मीरा

पायो जी, मैंने राम-रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत गुरु, किरपा करि अपनायो ।
जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सत गुरु, भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरखि-हरखि जग गायो ।

×× ××

नानक देव

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख-सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ।।
नहिं निंदा नहिं स्तुति जाके, लोभ, मोह, अभिमान ।
हरष-सोक तें रहै नियारो, नाहि मान-अपमान ।।

×× ××

❑ उचित लय-ताल से पद एवं दोहों का पाठ करें । एकल, गुट में सस्वर पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से इनमें आए भावों को स्पष्ट करें । कुछ दोहों एवं पदों के भावार्थ लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए देशज शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

किसी प्राचीन कवि की जानकारी प्राप्त करो :

- परिचय
- मुख्य ग्रंथ
- लेखन की भाषा
- विधाएँ

वृंद

फेर ने ह्वे हैं कपट सों जो कीजै व्यौपार ।
जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार ।।
भले-बुरें सब एक सों जौं लौ बोलत नाहिं ।
जानि परतु हैं काक पिक-रितु वसंत के माँहि ।।

×× ××

रैदास

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी । जाकी अंग-अंग बास समानी ।।
प्रभु जी तुम वन घन हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ।।
प्रभु जी तुम माली हम बागा । जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा । ऐसी भगति करै रैदासा ।।

×× ××

रसखान

धूरि भरे अति सोभित स्याम जू वैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियाँ कटि पीरी कछोटी ।।
वा छवि को रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सौ लै गयो माखन रोटी ।।

×× ××

❑ कक्षा में 'सस्वर दोहे-प्रस्तुति' प्रतियोगिता का आयोजन करें । सूर, कबीर, तुलसी, मीरा के अन्य दोहे-पद पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्यार्थियों को कुछ नीतिपरक दोहों के संकलन करने तथा हाव-भाव से गाने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

सुनो तो जरा

किसी एक कहावत के अर्थ का अनुमान लगाते हुए संबंधित आशय सुनाओ ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

हरष = खुशी
नियारो = अनोखा
सम = बराबर
बास = खुशबू
सोनहि = सोना, स्वर्ण
अमोलक = अमूल्य
सत = सत्य
भवसागर = संसार सागर
तरि = तैर
हरखि = प्रसन्न होकर
जस = यश
विलोकत = देखकर
वारत = न्योछावर
काम = कामदेव
काग = कौआ
हरि = कृष्ण, विष्णु

बताओ तो सही

तुम्हें पठित पदों में से कौन-सा पद अच्छा लगा और क्यों ? बताओ ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर तुम किसी बाग के बागवान होते तो .....

वाचन जगत से

किसी बाल उपन्यास का लघु अंश पढ़ो और कक्षा में बताओ ।

अध्ययन कौशल

संकेत स्थल की संरचना ज्ञात करो और अध्ययनपूरक वीडियो क्लिप्स डाउनलोड करो और पढ़ो ।

मेरी कलम से

अपने विद्यालय में मनाए गए संविधान दिवस का वृत्तांत तैयार करो ।

खोजबीन

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'कबीर ग्रंथावली' से दस दोहे ढूँढ़कर अर्थसहित चार्ट पेपर पर लिखो ।

❊ पाठ के किसी एक पद का सरल अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

संत साहित्य समाज के लिए पथ प्रदर्शक का काम करता है ।

भाषा की ओर

वाक्य में रेखांकित शब्दों के शुद्ध रूप बनाकर वाक्य पुनः लिखो :

वह पाठशाला नहीं आया **क्युंकि** वह बीमार है ।

आज **बहोत** गर्मी है ।

भारिश के होने से जंगल हरा-भरा हो गया ।

उसने पूछा **की** क्या साहब अंदर हैं ?

मैं कल मुंबई **जाउँगा** ।

राकेश **ओर** उसका भाई साथ-साथ खेलते हैं ।

वे अपना काम स्वयं करते **है** ।

मय अपनी पढ़ाई पूरी करके खेलने जाती हूँ ।

किसी की **निदा** नहीं करनी चाहिए ।

उसके पास साइकिल है **इसलिये** वह जल्दी आता है ।